ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
April-June, 2024 : 1(3)13-21
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

डॉ जयशंकर शुक्ल
विषय विशेषज्ञ, कोर एकेडमिक यूनिट, परीक्षा शाखा, शिक्षा विभाग, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली

Corresponding Author :
डॉ जयशंकर शुक्ल
विषय विशेषज्ञ, कोर एकेडमिक यूनिट, परीक्षा शाखा, शिक्षा विभाग, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली

ब्राह्मी लिपि के संदर्भ में प्राचीन लिपियों की विकास यात्रा

सारांशिका:

किसी भी भाषा के विकास का प्रथम चरण उसकी लिपि के विकास के रूप में देखा जा सकता है। वास्तव में सबसे पहले भाषा का व्यवहारिक रूप हमारे सामने आता है। जहां हम अपने अनुभव एवं भावों को एक दूसरे के साथ वाचिक अथवा लिखित रूप में साझा करते हैं। जब हम किसी भाव को वाचिच रूप में साझा करते हैं तो वह ध्वनियों के माध्यम से संभव होता है। और यह ध्वनियां जिन प्रतीकों के द्वारा अपना आकर प्राप्त करती है उनको लिपि अथवा स्क्रिप्ट के नाम से जाना जाता है। जब हम इन्हीं चीजों को लिखकर के साझा करते हैं तो एक विशेष तरह की प्रतीकात्मक चिह्नों के माध्यम से हम अर्थ कथन रखने का प्रयत्न करते हैं। वह विशेष प्रकार का चिन्ह अपने साथ विशेष प्रकार की ध्वनि को लेकर चलता है। जिसको डीकोड करके हम उसके साथ सही अर्थ को जान एवं समझ सकते हैं। इस प्रकार लिपियों के क्रमिक विकास के साथ एक भाषा आकार लेती है जो आगे चलकर के वाचिक एवं लिखित रूप से ज्ञान को संरक्षित करने की एक कड़ी बनती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि विश्व में अनुभूतियों को अभिव्यक्तियों तक ले आने के लिए भाषा प्रमुख माध्यम बनता है। हम जानते हैं कि विश्व की अधिसंख्य भाषाओं की जननी संस्कृत को माना जाता है। संस्कृत भाषा का उदय कैसे हुआ यह सदा से ही विमर्श का विषय रहा है। यह लेख उन लोगों के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है, जो संस्कृत भाषा के उदय का इतिहास जानना चाहते हैं। क्योंकि कुछ लोगों की मान्यता है कि संस्कृत भाषा एक करोड़ 96 लाख ई०पू की है। यह सिर्फ उनकी मान्यता है।

बीज शब्द: चिंतनशील, सनातन मानवीय, कल्याण, प्रशस्त, अध्ययन, संवेदनाओं, लक्ष्यों, संबंध, परिवर्तनकारी, मध्यम मार्ग, प्रेरणा, प्रतिपादन, मित्रता, समन्वय, समीक्षात्मक, माध्यम, सिंधु लिपि, माध्यम, वर्णित, प्रमुख, भावनाओं, विचार, सरलीकरण, कल्याणकारी।

1. अध्ययन का उद्देश्य:

1.1. ब्राह्मी लिपि के विशेष संदर्भ में चिंतनशील अध्ययन के परिवर्तनकारी अनुभव को सभी के लिए प्रेरणा के रूप में प्रदर्शित करें पाठक, समाज परिवर्तन की अपनी यात्रा स्वयं शुरू करें

1.2. ब्राह्मी लिपि, लिपि का पठन ज्ञान देने वाला है, मानवीय शांति देने वाला है, अतीत की जानकारी देने वाला है, अतः कल्याणकारी है और जो कल्याणकारी है वही श्रेयस्कर है।

1.3. ब्राह्मी लिपि विश्वकल्याण के लिए मैत्री भावना पर बल देती हैं। ठीक वैसे ही जैसे समकालीन अन्य लिपियों ने मित्रता एवं समन्वय के प्रसार की बात कही है।

1.4. प्राचीन कालीन लिपियों के अध्ययन के द्वारा हम यह मानते हैं कि लिपियों में वर्णित ज्ञान विश्व बंधुत्व एवं मैत्री के सुगंधित पुष्पों की महक से ही संसार में प्रेम व सद्भाव का सौरभ फैल सकता है।

1.5. ब्राह्मी लिपि के पठन के माध्यम से हम यह समकालीन विश्व के अतीत में आपसी जुड़ाव को लेकर कह सकते हैं कि मित्रता ही सनातन नियम है।

1.6. ब्राह्मी लिपि को पढ़ने के लिए निश्चित रूप से तत्कालीन व्यवस्था का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है। ब्राह्मी लिपि एवं सिंधु घाटी की संस्कृति और लिपि अपने आप में भारतीय और भारतीयता को समाए हुए हैं।

1.7 यह निश्चित तौर पर मानवीय संवेदनाओं और लक्ष्यों के मध्य में संबंध में रखते हुए मध्यम मार्ग का प्रतिपादन करते आगे बढ़ती है। इसने मानव मात्र के लिए कल्याण का मार्ग उसके इसी जीवन में प्रशस्त किया है।

2. तर्क: प्रस्तुत शोध पत्र में ब्राह्मी लिपि के पठन के सामजिक प्रभाव एवं ग्राह्यता पर प्रकाश डालते हुए , इसका समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, जिसके माध्यम से सिंधु घाटी की लिपि के माध्यम से वर्णित प्रमुख भावनाओं व विचारों का सरलीकरण एवं इनके उद्देश्य प्रस्फुटित हो सकें।

3. अनुसंधान क्रियाविधि:

3.1. नमूना: नीति दस्तावेज़ और दिशानिर्देश

3.2. उपकरण: गुणात्मक दस्तावेज़ विश्लेषण

3.3. डिज़ाइन: वर्णनात्मक साहित्य समीक्षा

4. अध्ययन के आधार : मुख्य रूप से निष्कर्षों के लिए फॉर्म दस्तावेज़ों में पहले से मौजूद डेटा का उपयोग करता है, जिसकाआशय परंपरागत एवं आधुनिक विश्लेषणों से प्राप्त होता है।

5. प्राथमिक स्रोत:

5.1. मूल संदर्भ ग्रंथ एवं संस्कृत आधार ग्रंथ।

5.2. अनुवाद एवं मूल हिंदी भाषा विज्ञान साहित्य।

6. प्रस्तावना : ऐतिहासिक एवं भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में जब हम लिपियों के क्रम विकास यात्रा की बात करते हैं तो इस संदर्भ में हमें पता चलता है कि ऐतिहासिक प्रमाण के रूप में हमारे पास बहुत कुछ है, जिसका सूचीकरण एवं व्यावहारिक दृष्टि से अंतर संबंध विकसित करने की आवश्यकता पर जोर दिया जा सकता है। सामान्यतया लिपियों की विकास केंद्रित जानकारी के लिए हमें हमारे अतीत के स्तंभ लेखो, शिलालेखों, मुहरों, सीलों, गुहा चित्रों एवं गुफाओं में अंकित ऐतिहासिक लिखित साक्ष्यों की ओर ध्यान देना पड़ेगा। जब हम प्राचीन लिपियों का इतिहास जानेंगे तभी हमारे समझ में आएगा यह हमारी संस्कृति कितनी पुरानी है। लिपियों का विकास साहित्य एवं संस्कृति के आकलन के बगैर संभव नहीं है।

7. ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति विषयक सिद्धांत : ब्राह्मी लिपि के उत्पत्ति के विषय में भाषा वैज्ञानिक एक मत नहीं रहे हैं इसके उत्पत्ति के संदर्भ और आधार को लेते हुए प्रचलित मान्यताओं में अनेक तरह के सिद्धांतों का प्रतिपादन देखा जाता है जिनमें दो प्रमुख धाराओं के अंतर्गत इसके मूल में आने वाले प्रक्रियागत एवं आकलनगत संयोजनों को देखा जा सकता है। ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति के विषय मे अनेक सिद्धान्त प्रस्तुत किये गए हैं। इन सिद्धांतों को दो मुख्य धाराओं में विभक्त किया जा सकता हैं।

1) विदेशी उत्पत्ति का सिद्धान्त , 2) वृहद भारत की स्वदेशी उत्पति का सिद्धान्त

7.1) विदेशी उत्पत्ति का सिद्धान्त: ब्राह्मी लिपि के प्रादुर्भाव एवं व्यवहारिक उपयोगिता केंद्रित विकास को देखने पर पता चलता है कि उसके विकास के सिद्धांतों में विदेशी उत्पत्ति के सिद्धांत भाषा वैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तुत किया गया। जिसके लिए बहुत सारे प्रमाण और उदाहरण देकर इशे सुनिश्चित करने का प्रयोग और स्थापना के लिए हमारे सामने आता है कि वह विकास के तत्व जो है वह विदेशी लिपियों से जुड़ते हैं। और इस बात को उन्होंने विभिन्न उपकरणों द्वारा प्रमाणित करने का प्रयत्न किया है। प्रारंभिक दौर में लिपियों के प्रादुर्भाव एवं विकास की प्रक्रियागत अवस्थाओं में इसके विदेशी उत्पत्ति के सिद्धांत को भी विद्वानों ने आधार प्रदान किया। विदेशी उत्पति के सिद्धान्त को मनाने वाले पुनः दो भागों में एवं उसके आगे जाकर तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है।

(क) यूनानी मूल से ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति - लिपियों के विकास के विभिन्न उपयुक्त सिद्धांतों को देखने पर पता चलता होता है कि विभिन्न कालों में इसके लिए विभिन्न तरह के विचारों और स्थापनाओं को प्रस्तुत किया गया। इन्हीं में से एक स्थापना ब्राह्मी लिपि के यूनानी प्रभाव को सामने रखता है। इस प्रभाव के आधार पर हम यह मानते हैं अभी यूनानी मूल से ही ब्राह्मी लिपि का विकास और विस्तार हुआ है। इस मत के पक्ष में भाषा वैज्ञानिकों के एक समूह ने पर्याप्त विवरण और प्रमाण देने का प्रयत्न किया है। जिसके आधार पर वह यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि ब्राह्मी लिपि का विस्तार भारत भूमि से अलग यूनानी मूल के प्रभाव में ही संभव हुआ है। इस सिद्धान्त के पोषक अल्फ्रेड म्यूलर हैं।

(ख) ब्राह्मी लिपि की सेमेटिक उत्पत्ति का सिद्धान्त - भाषा वैज्ञानिकों का एक समूह स्थापित तर्क एवं मान्यता के अनुसार यह प्रमाणित करने में पूरी तरह संलग्न रहा कि ब्राह्मी लिपि का सेमेटिक उत्पत्ति का एक प्रमाण रहा है, जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि सेमेटिक उत्पत्ति के द्वारा ही ब्राह्मी लिपि आकार में आई और निरंतर विकास करती रही। यह आकार में आना और विकास प्राप्त करना सेमेटिक मूल को लेकर के आगे बढ़ता रहा है। जिसको की विद्वानों ने अलग-अलग तरीके से तथ्यों तथा तर्कों के आलोक में प्रमाणित करने का प्रयास किया। विलियम जोनश इस सिद्धांत के मुख्य प्रस्तुत करता हैं। इसे भी तीन भागों में विभक्त किया गया है-

1. फिनीशीयान मूल 2. दक्षिण सेमेटिक मूल 3. उत्तर सेमेटिक मूल

7.2) वृहद भारत की स्वदेशी उत्पति का सिद्धान्त : लिपियों के उद्भव और विकास के संदर्भ में भाषा वैज्ञानिकों ने इसके स्वदेशी उत्पत्ति के सिद्धांत का भी प्रवर्तन किया है, जिसके आधार पर प्राचीन ब्राह्मी लिपि के उत्पत्ति और विकास के समस्त सूत्र भारतीय भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों में भाषाई विकास के क्रमागत संदर्भ में प्राप्त होते हैं। भाषा वैज्ञानिकों ने विभिन्न त्रिकोण तथ्यों एवं प्रमाणों के आधार पर यह सुनिश्चित करने का उपक्रम किया है की ब्राह्मी लिपि का उत्पत्ति और विकास भारत की स्वदेशी उत्पत्ति के सिद्धांत में ही स्थापित मानी जा सकती है। साहित्य संस्कृति एवं कला के समयगत विकास में यह परिलक्षित होता है कि आधुनिक काल में प्रचलित विभिन्न भूभाग की लिपियों का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है, जिसके उद्भव के लिए हम सिंधु घाटी की सभ्यता की अपठित लिपि को काफी हद तक कारण मान सकते हैं। इस विषय में अभी बहुत

सारा शोध होना बाकी है जिसके माध्यम से हम यह सिद्ध कर सकें कि ब्राह्मी लिपि के आधार को ढूंढने के लिए हमें कहीं बाहर जाने की आवश्यकता नहीं है वर्णन हमें सिंधु घाटी में प्रचलित लिपि के आधार और पैटर्न को देखना होगा। ब्राह्मी लिपि के उद्भव के स्वदेशी सिद्धान्त को भी दो भागों में विभक्त किया जाता है-

1. दक्षिण मूल 2. आर्य मूल

7.3) **ब्राह्मी लिपि का विकास की प्राचीनता :** अभी तक माना जाता था कि ब्राह्मी लिपि का विकास चौथी से तीसरी सदी ईसा पूर्व में मौर्यों ने किया था, पर भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के ताजा उत्खनन से पता चला है कि तमिलनाडु और श्रीलंका में यह ६ठी सदी ईसा पूर्व से ही विद्यमान थी।

अशोक स्तम्भ पर ब्राह्मी लिपि देशी उत्पत्ति का सिद्धान्तसंपादित करते हुए कई विद्वानों का मत है कि यह लिपि प्राचीन (सिन्धु लिपि) से निकली, अतः यह पूर्ववर्ती रूप में भारत में पहले से प्रयोग में थी। सिन्धु लिपि के प्रचलन से हट जाने के बाद प्राकृत भाषा लिखने के लिये ब्रह्मी लिपि प्रचलन मे आई। ब्रह्मी लिपि में संस्कृत मे ज्यादा कुछ ऐसा नहीं लिखा गया जो समय की मार झेल सके। प्राकृत/पाली भाषा मे लिखे गये मौर्य सम्राट अशोक के बौद्ध उपदेश आज भी सुरक्षित है। इसी लिए यह सत्य है कि इस का विकास मौर्यों ने किया। यह लिपि उसी प्रकार बाँई ओर से दाहिनी ओर को लिखी जाती थी जैसे, उनसे निकली हुई आजकल की लिपियाँ।

8 **ब्राह्मी लिपि का भौगोलिक एवं समयगत विश्लेषणात्मक विवेचन** : ब्राह्मी लिपि के विकास क्रम को जब हम तत्कालीन राजनीतिक भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में देखते हैं तो हमें तीन राजवंशों के द्वारा प्रयुक्त लिपि के अलग-अलग विभिन्न स्वरूपों का पता चलता है वास्तव में यह स्वरूप विभिन्नता के होते हुए भी भी प्रारूप, प्रयोग, एवं आकार में अधिसंख्य एकरूपता लिए हुए दिखाई पड़ती हैं। शासको द्वारा अपने राज्य का आदमी प्रयोग की गई लिपि के आधार पर हम इसका मूल्यांकन करते हुए विवेचन कर सकते हैं। राजाज्ञा एवं राजकीय निर्देशों को मुहरों पर, सीलों पर, स्तंभों पर, शिलालेखों पर तथा तम्र पत्रों पर अंकित करवाने की प्रक्रिया में प्रयुक्त लिपि का अध्ययन किया जा सकता है। इस आधार पर लिपियों के विकास के प्रारंभिक दौर को हम निम्नलिखित तीन शासको के साथ जोड़कर देख सकते हैं-

1. अशोक कालीन ब्राह्मी लिपि, 2. कुषाण कालीन ब्राह्मी लिपि और 3. गुप्त लिपि

क. **उत्तर भारत शैली -** ब्राह्मी लिपि को जब हम भारतीय परिक्षेत्र के विभिन्न नगरों एवं ग्रामों के प्रचलित मौखिक एवं लिखित भाषा और साहित्य के स्वरूप को देखते हैं तो हमें ब्राह्मी लिपि का एक नया स्वरूप प्राप्त होता है। भारतीय संदर्भ में उत्तर भारत में प्रचलित भाषिक दृष्टिकोण को लेते हुए उनकी लिपियां के आधार पर हम देखते हैं कि यहां पर प्रचलित लिपि को आकर व्यवहार एवं तकनीकी उत्तर भारतीय शैली की लिपि के रूप में पहचान दी गई। उत्तर भारत शैली से लिपियों के क्रमागत विकास में उत्तर भारत शैली के अंतर्गत तीन निम्नलिखित महत्वपूर्ण लिपियों को पाया गया है; यथा-

1. नागरी लिपि, 2. बांग्ला लिपि, 3. शारदा लिपि और

ख **दक्षिण भारतीय शैली -** भूभाग केंद्रित आधार को लेते हुए जब हम लिपि के समानांतर विश्लेषण को देखते हैं तो पता चलता है कि उसे कालखंड के साहित्यिक संस्कृत एवं विवेचनात्मक परिदृश्य में लिपि के विकास का निम्नलिखित भाषिक कम देखा जा सकता है, जिसके आधार पर हम भाषा साहित्य संस्कृति और राजनीति के संदर्भों को लेते हुए लिपि के क्रमागत विकास को रेखांकित कर सकते हैं। सांस्कृतिक विविधता एवं एकरूपता के मध्य पहचान की विशिष्ट व्यवस्था को देखते हुए लिपियों के विकास क्रम को भाषा के विकास के साथ जोड़कर देखा जा सकता है। दक्षिण भारतीय शैली से लिपियों के विकास में दक्षिण भारत शैली के अंतर्गत तीन निम्नलिखित महत्वपूर्ण लिपियों को पाया गया है; यथा-

1. तेलुगु कन्नड लिपि 2. तमिल लिपि 3. ग्रंथ लिपि

8.1. प्राचीन लिपियों से आधुनिक लिपियों का विकास : आज के समय में प्रचलित लिपियों का जब हम व्याकरणिक दृष्टि से एवं साहित्यिक दृष्टि से अध्ययन करते हैं तो यह सहज ही उद्घाटित होता है की आज के समय में प्रचलन में जो लिपियां सक्रियता पूर्वक प्रयोग में ली जा रही है वह निश्चित रूप से प्राचीन लिपियों का ही क्रमागत विकास यात्रा प्राप्त किए नवीन स्वरूप माना जा सकता है। आज के समय में प्रचलित एवं आज से पूर्व प्रचलित लिपियां के विकास की अवधारणा पर जब हम विचार करते हैं तो हमारे सामने निम्नलिखित स्थितियां दृष्टिगोचर होती हैं;

ख. दक्षिण भारतीय शैली से - दक्षिण भारतीय शैली में उपयोग के विकास को परिभाषित दृष्टिकोण से विशेष कर तेलुगु कन्नड़ और तमिल भाषा के लिए विकसित की गई लिपि से जुड़ती है। आधुनिक लिपियों में प्राचीन लिपियों से यह विकास संस्कृति और साहित्य को एक मार्ग प्रदान करता है। जिसके माध्यम से विविधता एवं संस्कृतिक एकता को आगे बढ़ाया जा सकता है। दक्षिण भारतीय शैली मुख्यतया तेलुगू लिपि, तमिल लिपि और ग्रंथ लिपि के माध्यम से सामने आता है। जो आगे चलकर के तेलुगु कन्नड़ लिपि से आधुनिक तेलुगु लिपि और आधुनिक तमिल ग्रंथ लिपि से प्राचीन ग्रंथ लिपि तथा मलयालम और आधुनिक ग्रंथ लिपि का विकास देखा जा सकता है। दक्षिण भारतीय शैली के अंतर्गत लिपियों के विकास की स्थितियों को कुछ इस प्रकार से देखा जा सकता है; यथा-

1. तेलुगु कन्नड़ लिपि से आधुनिक तेलुगू लिपि,
2. आधुनिक कन्नड़ तमिल लिपि से आधुनिक तमिल ग्रंथ लिपि,
3. आधुनिक तमिल ग्रंथ लिपि से प्राचीन ग्रंथ लिपि तथा मलयालम और आधुनिक ग्रंथ लिपि का विकास हुआ।

क उत्तर भारत शैली में - उत्तर भारतीय शैली में लिपि का विकास का एक समग्र साहित्य और संस्कृति की यात्रा करता हुआ प्रतीत होता है। यहां से प्राप्त स्क्रिप्ट हमें पूर्ववर्ती लिपि और बाद की लिपि के सामान्य और विशिष्ट अंतर को बताता है। मानव विकास की परिकल्पनाओं में लिपियों का विशेष महत्व रहा है क्योंकि लिपियों के माध्यम से ही हम शिक्षा साहित्य एवं संस्कृति का आदान-प्रदान एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी तक करते आ रहे हैं भूभाग्य केंद्रित लिपियों के पहचान को लेकर जब हम उत्तर भारतीय शैली के लिपियों का मूल्यांकन करते हैं तो यह पूर्ववर्ती ब्राह्मी लिपि अथवा उससे भी पहले सिंधु घाटी की लिपि से काफी हद तक मिलती-जुलती प्रतीत होती है। यह पैटर्न को देखें या आकार को देखें दोनों ही स्थितियों में इनमें काफी समानताएं देखी जा सकती है। उत्तर भारतीय शैली के अंतर्गत लिपियों के विकास की स्थितियों को कुछ इस प्रकार से देखा जा सकता है; यथा-

1. नागरी लिपि से - नागरी लिपि अपने समय की सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं प्रचलित लिपि के रूप में मानी जाती रही है। यह यह उत्तर भारत की शैली के अंतर्गत आने वाले लिपियां की विकास यात्रा में सर्वाधिक चर्चित एवं लोकप्रिय लिपि के रूप में मानी जाती है। परवर्ती काल में नागरी लिपि से जुड़ी हुई अन्य लिपियों का भी विकास देखा जा सकता है। यह विकास अपने साथ-साथ बहुत सारे प्रतीकों, चिन्हों एवं संकेतों की रचनात्मक यात्रा की साक्षी भी है, जो परंपराओं से प्राप्त समाधानों की ओर हमें उन्मुख करती है। उत्तर भारत की शैली के अंतर्गत यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं उपयोगी लख मानी जाती है जिससे कि कई अन्य लिपियों का विकास देखा जा सकता है। नागरी लिपि से आने वाले समय में क्रमशः निम्नलिखित लिपियों और भाषाओं का विकास हुआ: यथा-

क. पूर्वी नागरीलिपि और ख. मध्य देशी नागरी लिपि

8.2. पूर्वी नागरी लिपि से - भारतीय परिवेश में परिवेश में पूर्वी भूभाग में प्रचलित विभिन्न भाषाओं के मूल विकास के क्रम को पारिभाषित करने का कार्य लिपि व्यवस्था के अंतर्गत स्थानीय नीति के शाखाओं का ज्यादा योगदान लिपि के विकास में

भौगोलिक रूप से आने वाले परिवर्तनों को लेकर अपना अस्तित्व सुरक्षित रखना है। लिपि के प्राचीन अवधारणा को लेकर नवीन परिवेश में उसके विस्तार को आंशिक पृष्ठभूमि के आधार पर अध्ययन में यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक ही लिपि के बदलाव और व्यावहारिक प्रयोग में आने वाले परिवर्तनों को हम भौगोलिक एवं स्थानीयता के प्रभावों के आधार पर देख सकते हैं परिवर्तन एवं विस्तार के उपरांत प्राप्त लिपि अपने आप में बेहद उपयोगी है। पूर्वी नागरी लिपि से आने वाले समय में क्रमशः निम्नलिखित लिपियों और भाषाओं का विकास हुआ: यथा-

क. मैथिली, ख. बिहारी ,

8.3 **बिहारी से -** आज के बिहार प्रदेश में प्रयोग में लाई जाने वाली भाषा के लिए लिपि व्यवस्था को हम अनवरत चल रही विकास यात्रा के संदर्भ में देख सकते हैं यहां पर ब्राह्मी लिपि के बिहार लिपि में परिवर्तन के फल स्वरुप आगे के बढ़ते हुए क्रम में भाषिक परिवेश में कुछ नया अपनाया जाना तथा कुछ पुराने को छोड़ दिया जाना महत्वपूर्ण रहा है लिपि व्यवस्था में बिहार के स्थान विशेष के भौगोलिक परिवेश के आधार पर अपनाया जाने वाली व्यवस्था को बिहार लिपि का विस्तार कर सकते हैं यह विस्तार लिपि के अनवर व्रत एवं संकुचन दोनों ही स्थितियों का देवता माना जाता है परिवेश के साथ-साथ भौगोलिक एवं अन्य सांस्कृतिक कारक ही इसके लिए सदैव से महत्वपूर्ण रहे हैं।बिहारी से आने वाले समय में क्रमशः निम्नलिखित लिपियों और भाषाओं का विकास हुआ: यथा-

क. तिरहूती कैथी, ख- भोजपुरी कैथी,

8.4. **मध्य देसी नागरी लिपि से -** मध्य देसी नागरी लिपि अपने उत्पत्ति के साथ ही समकालीन भौगोलिक परिस्थितियों में संस्कृति, साहित्य एवं कला को पोषित करने वाली भाषाओं के लिए लिपिओं के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उस समय प्रयोग में आने वाली अथवा आकार ले रही भाषाओं के उद्भव और विकास में मध्य देशी नागरी लिपि में अभूतपूर्व एवं अप्रतिम सहयोग किया, जिसके माध्यम से यह भाषाएं निरंतर पुष्पित तथा पल्लवित होती चली गई। इस तरह से साहित्य और संस्कृति को निरंतर नए आयाम प्रधान किए। मध्य देसी नागरी लिपि से आने वाले समय में क्रमशः निम्नलिखित लिपियों और भाषाओं का विकास हुआ: यथा-

क- गुजराती, ख- मालवी, ग- महाजनी मोढी

इन भाषाओं का निर्माण मध्य देसी नागरिक लिपि के माध्यम से हुआ। इस विकास प्रक्रिया में स्थान के प्रभाव को लेकर भाषिक प्रदेश में नवीन स्थितियों का निर्माण और क्रमशः विकास देखा जाता रहा है। और इस तरह से लिपि और भाषा के विकास में समग्रतापूर्वक समावेशित प्रयोगात्मक स्वरूप हमारे सामने निकल कर आता है।

1. **बंगलालिपि से :** नागरी लिपि जो की ब्राह्मी लिपि से बराबर उद्भूत नवीनतम संभावनाओं को उनके उच्चतम उद्देश्य तक पहुंचाने की प्रक्रिया की सतत साक्षी रही है, ने परवर्ती काल खंड में बांग्ला लिपि को विकास हेतु उर्वरा भूमि एवं पोषण प्रदान किया। संस्कृति, साहित्य, कला एवं विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के निरंतर विकास हेतु बंग्ला पी का विकास उस विशेष शोभा के लिए अत्यंत आवश्यक रहा है जहां पर अभिव्यक्ति एवं अनुभूति के लिए ने ने रास्ते खुलते चले गए। बंगला लिपि ने समकालीन पूर्वी एवं उत्तर पूर्वी प्रदेशों के भाषा भाषियों के लिए नये भाषिक परिवेश का निर्माण किया जिससे कि वे निरंतर सांस्कृतिक समृद्धि को प्राप्त होते चले गए। बंगला लिपि की विशेषता उसे समकालीन सांस्कृतिक परिवेश में एक अलग स्थान प्रदान करता है। बांग्ला लिपि से आने वाले समय में क्रमशः निम्नलिखित भाषाओं का विकास हुआ: यथा-

क- असमी, ख- उड़िया,

ग- नेवारी, घ- प्राचीन मणिपुरी और

2. शारदा लिपि से - सुदूर पश्चिमी सीमांत प्रदेश के निवासियों के लिए शारदा लिपि प्रयोग में लाई जाती रही है। शारदा लिपि की विशेषताएं इसे कहीं न कहीं नागरी लिपि से जुड़ी हुई दिखाती हैं। उस भूभाग में निवास करने वाले लोगों के व्यक्तित्व विकास एवं सामाजिक ताने-बाने में काम आने वाली संबाद प्रक्रिया के अंतर्गत शारदा लिपि और इससे उत्पन्न भाषाओं का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जिसके लिए नागरी लिपि भी उतनी ही जिम्मेदार मानी जाती है, जितने की शारदा लिपि का विकास। लिपि का यह क्रमागत विकास निरंतर आनुभूतिक धरातल पर संवाद एवं समृद्धि के परचम को लहराने का काम करती रही है, जिससे कि भाषा के स्तर पर हम सुदृढ़ हुए हैं। शारदा लिपि से आने वाले समय में क्रमशः निम्नलिखित लिपियों और भाषाओं का विकास हुआ: यथा-

क- टक्करी,	ख- चम्बा,
ग- मौण्डीऔली,	घ- जौनसारी ,
च- कष्टवारी,	छ- कुल्लू ,
ज- डोगरी,	झ- लण्डा

यहां हम देख सकते हैं कि भाषाओं का विकास लिपियों के माध्यम से निरंतर किस प्रकार हुआ ऊपर दिए गए उद्योगों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि उक्त लिपियों के माध्यम से निरंतर भाषा का निर्माण हुआ। भारत में जितनी भी भाषा चल रही हैं वह सब ब्राह्मीलिपि या बंम्भी लिपि या धम्मलिपि (यह सब ब्राह्मीलिपि के ही नाम है) से विकसित हुई हैं। और सब भाषाओं का उदय ब्रह्मा लिपि से ही उदय हुआ है।

9. सम्राट अशोक कालीन ब्राह्मी लिपि:

9.1. सम्राट अशोक कालीन जो ब्राह्मी लिपि जिसे धम्मलिपि भी कहते हैं बंम्बीलिपि कहते हैं। विद्वानों में इस विषय में एक राय बनाना उनके अपने शोध पर निर्भर करता है। परंतु यह सत्य है कि बाम लिपि ग्रामीण लिपि का ही देशज रूप है।

9.2. बस उसमें कुछ अक्षर थे ही नही जैसे #ऋ, #श्र, #क्ष, #त्र #ज्ञ लेकिन बाद में इन सब को जोड़ा गया ओर इनके बैगर संस्कृत लिखना असम्भव है। सम्राट अशोक के किसी भी शिलालेख में इन अक्षरों का प्रयोग ही नहीं है। उस समय से लेकर आज तक के इस समय में उस भूभाग में इन अक्षरों का प्रयोग नहीं किया जाता है।

9.3. सम्राट अशोक के शिलालेख को पढ़ने में किए गए प्रयत्नों के बारे में हमें स्पष्ट पता नहीं है परंतु हम जानते हैं कि सम्राट अशोक के शिलालेख 1837 में जेम्स प्रिंसेप ने सबसे पहले पढे थे।

9.4. उससे पहले सम्राट अशोक के शिलालेखों को पढ़ा ही नहीं जा सका था। या हम यह कह सकते हैं उसे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से उपयोगी नहीं समझा गया। अथवा इसकी कोशिश ही नहीं की गई कि उसे पढ़कर उस कालखंड की स्थितियों का वहां की संभावनाओं का जायजा लिया जा सके।

9.5. जैसे ही जेम्स प्रिंसेप ने सम्राट अशोक के ये लेख पढ़े तो भारत में ब्रह्मी लिपि को पढ़ने वाले इतने विद्वान पैदा हो गए और उन्होंने अपनी सुविधानुसार तथा अपने आवश्यकतानुसार कुछ नवीन अक्षरों का निर्माण कर लिया जैसे शाल्व वाले #श और निर्धन वाले #ष।

9.6. इनका प्रयोग सम्राट अशोक के पश्चिमी शिलालेख में हैं। रश्मि खेत में इन शब्दों का प्रयोग समय से लेकर आज तक के समय में निरंतर किया जाता रहा है जो पूरी क्षेत्र के प्रयोग से भिन्न है।

9.7 उनमें किया गया क्ष त्र ज्ञ का प्रयोग सम्राट अशोक के किसी भी शिलालेख में नहीं किया गया है। यह सम्राट अशोक के शासनकाल के समय उसके राजधानी और आसपास अर्थात पाटलीपुत्र और उसके आसपास के जनपदों में आज भी यह तीनों अख्तर प्रयोग नहीं किए जाते हैं।

9.8. भाषा वैज्ञानिकों एंव इतिहासकारों के द्वारा प्रस्तुत किए गए नये नये तथ्यों, तर्कों एवं शोधों के अनुपालन में यह स्पष्ट देखा जा सकता है कि वह ब्राह्मी लिपि के उद्भव और विकास तथा उत्पत्ति के विषय में एक मत नहीं है। इस तरह हम कह सकते हैं कि ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति के विषय में इतिहासकारों में एक राय नहीं है।

10. ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक ग्रंथों में साक्ष्य :

10.1. बौद्ध-धर्म के प्राचीनतम महत्वपूर्ण ग्रंथ 'ललितविस्तर' में हमें ६४ लिपियों के नाम प्राप्त होते हैं, जो बुद्ध को उनके अध्ययन एवं पठन-पाठन के क्रम में सिखाई गई।

10.2. गौतम बुद्ध को सिखाई गई उन लिपियों में 'नागरी लिपि' का नाम हमें प्राप्त नहीं होता है, जबकि 'ब्राह्मी लिपि' का नाम हमें प्राप्त होता हैं।

10.3. विभिन्न साहित्यिक साक्ष्यों में ऐसा कहा जाता है कि 'ललितविस्तर' का चीनी भाषा में अनुवाद पहली शताब्दी ई० में हुआ था।

10.4. ब्राह्मी लिपि के प्रयोग कर्ता प्राचीन बौद्ध मतावलंबी भी थे। इसे इस रूप में जाना जा सकता है कि जिस लिपि में अशोक के लेख हैं वह प्राचीन बौद्धों की निकाली हुई ब्राह्मी लिपि है।

10.5. जैन-धर्म के महत्वपूर्ण ग्रंथ 'पन्नवणा सूत्र' और 'समवायांग सूत्र' में १८ लिपियों के नाम दिए गए हैं, जिनमें पहला नाम बंभी (ब्राह्मी) है।

10.6. साहित्यिक साक्ष के अंतर्गत जैन-धर्म के भगवतीसूत्र का आरंभ 'नमो बंभीए लिबिए' (ब्राह्मी लिपि को नमस्कार) से होता है।

10.7. जैन-धर्म ग्रंथ के 'प्रज्ञापनासूत्र' में प्राप्त होता है कि 'अर्धमागधी' भाषा जिस लिपि में प्रकाशित की जाती है वह ब्राह्मी लिपि है'।

11 निष्कर्ष एवं प्राप्तियां

11.1. पुरातात्विक साक्ष्यों एवं साहित्यिक मान्यताओं के अनुसार इस लिपि का सबसे पुराना रूप अशोक के शिलालेखों में ही मिला है।

11.2. पुरातात्विक साक्ष्यों के अनुसार अशोक के शिलालेखों में उत्कीर्ण विवेचना के अंतर्गत हमें 'ब्रह्मलिपि' का नाम भी मिला है।

11.3. सबसे प्राचीन लिपि भारतवर्ष में अशोक की पाई जाती है जो सिंध नदी के पार के प्रदेशों (गांधार आदि) को छोड़ भारतवर्ष में सर्वत्र बहुधा एक ही रूप की मिलती है।

11.4. उपर्युक्त शोध संदर्भों के विवेचन के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि ब्राह्मी लिपि मध्य आर्यावर्त की लिपि है।

11.5. मध्य आर्यावर्त की ब्राह्मी लिपि से क्रमशः उस लिपि का विकास संभव हुआ जो परवर्ती काल में नागरी लिपि कहलाई।

11.6. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में ईसा की सातवीं शताब्दी में मगध के राजा आदित्यसेन के कालखंड के कुटिल मागधी अक्षरों में नागरी का वर्तमान रूप हमें स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है।

11.7. अर्धमागधी भाषा मथुरा और पाटलिपुत्र के बीच के प्रदेश की भाषा को माना जाता है, जिससे हिंदी का प्रादुर्भाव संभव हुआ।

11.8. साक्ष्यों के अनुसार ईसा की ९वीं और १०वीं शताब्दी से नागरी अपने विकास के पूर्ण रूप में हमें प्राप्त होती है।

11.9. ईसा की ९वीं और १०वीं शताब्दी से हमें यह पता चलता है कि किस प्रकार अशोक के समय के अक्षरों से नागरी अक्षर क्रमशः रूपांतरित होते होते अपने संशोधित एवं परिवर्तित स्वरूप में प्राप्त होते हैं।

11.10. प्राचीन भारतीय भौगोलिक क्षेत्र के पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण एवं मध्य भाग में प्रयोग में लाई जाने वाली भाषाओं में प्रयुक्त लिपि ब्राह्मी लिपि अथवा इससे उत्पन्न लिपि को माना जा सकता है।

11.11 विशेष साक्ष्यों एवं साहित्यिक प्रमाणों के आधार पर इस बात को सिद्ध किए जाने की आवश्यकता है कि अब तक ना पढ़ी जा सकने वाली सिंधु घाटी की लिपि एवं बहुचर्चित आधुनिक लिपियों की आधार स्रोत ब्राह्मी लिपि दोनों ही आपस में एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं।

11.12. सिंधु घाटी की लिपि एवं ब्राह्मी लिपि के पैटर्न, प्रारूप, प्रक्रिया एवं विकास को अगर आपस में जोड़कर देखते हैं तो हमें एकरूपता ही मिलेगी।

11.13. सिंधु घाटी की सभ्यता की अब तक की अपठित लिपि के बारे में समग्र जानकारी एवं ब्राह्मी लिपि से इसके अंतर्संबंध की दिशा एवं दशाबोध के लिए हमें इस विषय पर आगे समग्र शोध करने की आवश्यकता है।

16 संदर्भ ग्रन्थ सूची

1- 'ललितविस्तर' एक समीक्षात्मक अध्ययन, लेखक- डॉ रामबली, प्रकाशक- कला प्रकाशन वाराणसी, प्रकाशन वर्ष 1995.

2- E. J. Thomas, 'Lalitavistara and Sarvastivada', Indian Historical Quarterly, Vol. XVI (1940);

3- G. K. Nariman, Literary History of Sanskrit Buddhism (Bombay, 1922);

4- Maurice Winternitz, History of Indian Literature (Vol. II, translated into English by Mrs. S. Ketkar and Miss H. Kohn (2nd Edition, delhi, 1972);

5- ललितविस्तार, अनुवादक -शांति भिक्षु शास्त्री,प्रकाशक -उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान (हिंदी ग्रंथ अकादमी) लखनऊ, प्रकाशन वर्ष -2016.

6- प्रज्ञापना सूत्र : एक समीक्षा, लेखक- श्री पारसमल संचेती, प्रकाशक- जिनवाणी प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष 2001.

7. प्राचीन भारतीय लिपि एवं अभिलेख, लेखक— डॉ. गोपाल यादव

8. ब्राह्मी सिक्के कैसे पढ़े, लेखक— श्री प्रदीप दत्तुजी बनकर

9. भारतीय जैन श्रमण संस्कृति अने लेखन कला, लेखक—मुनि श्री पुण्यविजयी म.सा.

10. ग्रंथ लिपि वर्णमाला— डॉ. एस.जगन्नाथ जी, अड्डयार पुस्तकालय, मैसूर।

11. पाण्डुलिपि विज्ञान,लेखक—डॉ. सत्येन्द्र जी, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर से प्रकाशित

12. शारदा मंजूषा, संपा, डॉ. अनिर्वाण दास, वाराणसी से प्रकाशित श्रुतसागर,१५ जुलाई, २०१४

13- प्रज्ञापना सूत्र : सम्पादक नेमिचन्द बांठिया पारसमल चण्डालिया, प्रकाशक -श्री अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ, जोधपुर, प्रकाशन वर्ष -2008.

14- समवायांग सूत्र, संपादक युवाचार्य मिश्रीमल जी मधुकर, अनुवादक - पं हीरालाल शास्त्री, प्रकाशक- आगम प्रकाशन समिति राजस्थान. 15- भगवतीसूत्र (व्याख्या प्रग्यप्ति) हिंदी अनुवाद, संपादक गम मनीषी प्रोफेसर महेंद्र कुमार, प्रकाशक- जैन विश्व भारती लाडनूं, राजस्थान प्रकाशन वर्ष -2013.

• • •